

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।  
ज्ञानं लब्धा परं शान्तिम् अचिरेणाधिगच्छति ॥ ३९  
चतुर्थ अध्याय, ज्ञानयोग, गीता



प्रयात बाजवाला दास  
प्रतिष्ठापक अध्यापिका

## महाविद्यालय संगीत

बचना : केशव महन्त  
सुब : बमैन बबुबा

मनब दिगन्त उड्डासि उठिल  
तोमाब सौम्य हाँहि,  
तोमाब वीणाब तानत जागिल  
हियाब पदुम पाहि ।

तुमियेतो आहि नाबीक बुजाला  
ज्ञानब पबम अर्थ,  
तुमियेतो दिला ज्ञानब शक्ति  
अमोघ अव्यर्थ ।  
आमाब काबणे तुमि अभिनब  
पूर्वज्योतिब सविता,  
आलोकित कबा हृदय आमाब  
आमिये तोमाब दुहिता ।  
जानो जानो तुमि आमाब बुकुलै  
थाकिब नोराबा नाहि ।

पबित्र एहि ज्ञानदायिनी  
बिद्याब निकेतन,  
इयाते देशब भिन्न जातिब  
भिन्न धर्मब मिलन ।  
भारतबे पूर्व भारती  
सन्दिके महाविद्यालय,  
तोमाब बेदीत झलालौ आहि  
प्राणब बन्ति अक्षय ।  
आमाब प्राणत बाजे येन आहि  
बिम्ब प्राणब बाँही ।